व्यवहार पर पर्यावरणीय प्रभाव
(Environmental effects on Behaviour)

मानव व्यवहार पर पर्यावरण से संबंधित कारकों का भी काफी प्रभाव पड़ता है। ऐसे कारकों को अस्थानगत (nonspatial) पर्यावरणीय कारक कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे कुछ कारकों की पहचान की है—

- आवाज (noise)
- मौसम (Weather)

→ व्यवहार पर आवाज का प्रभाव — कई मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि आवाज या शोर-गुल का प्रभाव तनावपूर्ण होता है। जब व्यक्ति को उच्च-तीव्रता की आवाज को सुनना पड़ता है, तो वे दैहिक रूप से अधिक उत्तेजित हो जाते हैं और उनके व्यवहार में चिड़चिड़ापन एवं आक्रमकता में वृद्धि हो जाती है। यह भी पाया जाता है कि जब व्यक्ति किसी आवाज से लगातार घिरा रहता है, तो धीरे-धीरे अपने आप को आवाज के प्रति अनुकूलित कर लेता है। अनुकूलन की इस प्रक्रिया को हैरिस (1943) ने अभ्यास (Habituation) कहा है। परंतु फिर भी उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। ग्लास का मत है कि इस अनुकूलन की प्रक्रिया में व्यक्ति को अपनी 'मनोवैज्ञानिक ऊर्जा' का खर्च करना पड़ता है जिसका परिणाम यह होता है कि

बाद के पर्यावरणीय तनावों तथा कुंठाओं के साथ निपटने की शक्ति कम हो जाती है इसका परिणाम स्पष्ट होता है कि उसका सामान्य व्यवहार तथा स्वास्थ्य दोनों ही खराब हो जाता है।

आवाज के और भी कई तरह के प्रभाव देखने को मिलते हैं आवाज की अवस्था में व्यक्ति पर्यावरण के प्रति कम अनुक्रियाशील हो जाता है कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में पाया कि लगातार उच्च आवाज के स्तर में कार्य करने से व्यक्ति में सामान्य स्वास्थ्य समस्याएँ तथा उच्च रक्तचाप की शिकायत हो जाती है

कुछ सामाजिक व्यवहारों पर भी आवाज का प्रभाव पड़ता है जैसे- मैथ्यूज एवं कैनन (1975) ने अपने अध्ययन में पाया कि कोलाहलपूर्ण अवस्था में होने पर व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की मदद कम करता है अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कोलाहलपूर्ण पास-पड़ोस होने पर अगल-बगल के व्यक्तियों के साथ सामाजिक अन्तःक्रिया में कमी हो जाती है। व्यक्ति का व्यवहार आक्रामक हो जाता है

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आवाज व्यक्ति के लिए उत्पीड़क होता है यह व्यक्ति को पर्यावरण की वस्तुओं की ओर ध्यान केन्द्रित करने में बाधक होता है अर्थात् इसका दुष्परिणाम अधिक स्पष्ट होता है

→ व्यवहार पर मौसम का प्रभाव — मौसम का प्रभाव भी मनुष्य के व्यवहार पर काफी पड़ता है जिसमें तापक्रम, वायु प्रदूषण, ऋणात्मक आयन, ओजोन तथा चन्द्र चक्र (lunar cycles) आदि का व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया है

मौसम में एक महत्वपूर्ण कारक तापक्रम है जिसका मानव व्यवहार पर काफी स्पष्ट प्रभाव पड़ता देखा गया है ग्रिफिट तथा विच (1971) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रयोज्यों को जब गर्म कमरे (93°F) में कार्य करने के लिए कहा गया तो उन्हें ठंडे कमरे (73.4°F) में कार्य करने की तुलना में अधिक आक्रामक व्यवहार

Scanned with CamScanner

होता पाया गया। रोटन तथा रोटन (1984) ने अपने अध्ययन में दो बड़े अमेरिकन शहरों में गर्मी के दिनों में कुछ आक्रमक अपराध का प्रेक्षण किया और पाया कि जैसे-जैसे तापक्रम में वृद्धि होती है कुछ आक्रमक अपराध जैसे हत्या तथा बलात्कार में भी वृद्धि होती पायी गयी। परंतु कुछ अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि जब तापक्रम में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है, तो आक्रमक व्यवहार में वृद्धि होने के बजाय कमी आ जाती है।

वायु प्रदूषण का भी प्रभाव मानव व्यवहार पर काफी पड़ता है। वायु प्रदूषण से तात्पर्य वायु में विभिन्न तरह के विषाक्त तत्वों के मिश्रण से होता है। इसके अन्तर्गत ओजोन, सल्फर आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड तथा कार्बन मोनोआक्साइड की मुख्य भूमिका होती है। वायु प्रदूषण का प्रभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य, कार्य निष्पादन तथा सामाजिक व्यवहार पर सर्वाधिक पड़ता देखा गया है। Heart (1976) के अनुसार वायु में कई प्रकार के प्रदूषकों के कारण व्यक्ति में एक विशेष प्रकार के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, जिसे 'वायु प्रदूषक संलक्षण' कहा जाता है। इस संलक्षण में व्यक्ति में थकान, सिर दर्द, चिड़चिड़ापन, विषाद, आँखों में जलन तथा अन्य समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। आधुनिक विशेषज्ञों के मतानुसार करीब 60 से 90% तक व्यक्तियों में होने वाले कैंसर का कारण किसी-न-किसी प्रकार का प्रदूषण ही होता है।

वायु प्रदूषण का कार्य निष्पादन तथा सामाजिक व्यवहार पर भी काफी बुरा प्रभाव पड़ता है। कई अध्ययनों में यह देखा गया है कि वायु प्रदूषण के कारण वाहन चलाने वाले व्यक्तियों की कार्य क्षमता में काफी कमी आती है, जिससे दुर्घटना की आवृत्ति में वृद्धि हो जाती है। इवान्स तथा जैकोब्स (1982) ने अपने अध्ययनों में यह पाया कि वायु प्रदूषण में वृद्धि से व्यक्ति के सहायतापरक व्यवहार में कमी तथा आक्रामकता में वृद्धि हो जाती है। कारेन एवं उनके सहयोगियों ने यह पाया कि वायु प्रदूषण से अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण में भी कमी आ जाती है।

तेजगति, हवा तथा वायुमंडलीय कारकों के कारण हवा के अणु आवेशित हो जाते हैं, जिन्हें [illegible] आयन कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि वायुमंडलीय बिजली की मात्रा से व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार काफी प्रभावित होता है। सुलमैन तथा उनके सहयोगियों ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि वायुमंडल में आयनस्त के स्तर में वृद्धि से आत्महत्या, औद्योगिक दुर्घटना तथा अन्य दूसरे तरह के अपराध आदि में वृद्धि होती पायी जाती है।

कुछ ऐसे अध्ययन भी हुए हैं जिनमें चन्द्र-चक्र का भी प्रभाव मानव व्यवहार पर पड़ते देखा गया है, हालांकि इसकी वैधता में असंगतता पायी गयी है। जिन मनोवैज्ञानिकों ने मानव व्यवहार पर चन्द्र चक्र के प्रभाव का अध्ययन करने की कोशिश की है उनका तर्क है कि समुद्र में ज्वार भाटा चन्द्रमा के कारण ही मूलतः होता है। मानव शरीर की संरचना के तत्व भी पृथ्वी की संरचना के तत्व के समान हैं अर्थात् 80% जल तथा 20% कार्बनिक तथा अकार्बनिक तत्व। अगर चन्द्रमा समुद्र के पानी में परिवर्तन ला सकता है, तो वह शरीर के भीतर के उत्तकों में भी परिवर्तन ला सकता है जिससे मनुष्य का व्यवहार भी प्रभावित होता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानव व्यवहार पर अस्थानगत कारकों जैसे- मौसम तथा आवाज का काफी प्रभाव पड़ता है, परंतु इस क्षेत्र में अभी और भी अधिक शोधों एवं अध्ययनों की आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner